NCERT Solutions for Class 12 History Chapter 6 भक्ति सूफी परंपराएँ

अभ्यास-प्रश्न

उत्तर दीजिए (लगभग 100-150 शब्दों में)

प्रश्न 1. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकालते हैं?

उत्तरः विभिन्न संप्रदायों-धार्मिक विश्वासों एवं आचरणों का समन्वय लगभग 8वीं-18वीं शताब्दी के काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकारों का तात्पर्य है कि इस काल में विभिन्न पूजा-प्रणालियाँ समन्वय की ओर बढ़ने लगी थीं। इस काल के साहित्य एवं मूर्तिकला दोनों से ही अनेक प्रकार के देवी-देवताओं का परिचय मिलता है। विष्णु, शिव और देवी की विभिन्न रूपों में आराधना की परिपाटी न केवल प्रचलन में रही अपितु उसे और अधिक विस्तार एवं व्यापकता भी प्राप्त हुई। देश के विभिन्न भागों के स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप माना जाने लगा। "महान" संस्कृत पौराणिक परम्पराओं एवं "लघु" परम्पराओं के पारस्परिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश में अनेक धार्मिक विचारधाराओं तथा पद्धतियों का जन्म हुआ।

विद्वान इतिहासकारों का विचार है कि विचाराधीन काल में पूजा-प्रणालियाँ के समन्वय के आधार में प्रमुख रूप से दो प्रक्रियाएँ कार्यशील थीं। इनमें से एक प्रक्रिया ब्राह्मणीय विचारधारा के प्रचार से संबंधित थी। पौराणिक ग्रंथों की रचना, संकलन तथा परिरक्षण ने इसके प्रसार को प्रोत्साहित किया था। पौराणिक ग्रंथों की रचना सरल संस्कृत छन्दों में की गई थी, जिन्हें वैदिक विद्या से विहीन स्त्रियाँ और शूद्र भी समझ सकते थे। दूसरी प्रक्रिया का संबंध स्त्रियों, शूद्रों तथा अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं एवं आचरणों को ब्राह्मणों द्वारा स्वीकृत किए जाने तथा उन्हें एक नवीन रूप प्रदान किए जाने से था।

समन्वय की इस प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण आधुनिक उड़ीसा राज्य में स्थित 'पुरी' में मिलता है।

बारहवीं शताब्दी तक पहुँचते-पहुँचते यहाँ के प्रमुख देवता जगन्नाथ (इसका शाब्दिक अर्थ हैसंपूर्ण विश्व का स्वामी) को विष्णु का एक रूप मान लिया गया था। यह और बात है कि विष्णु के उड़ीसा में प्रचलित रूप तथा देश के अन्य भागों से मिलने वाले स्वरूपों में अनेक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। देवी संप्रदायों में भी समन्वय के ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं। सामान्य रूप से देवी की पूजा आराधना सिंदूर से पोते गए पत्थर के रूप में ही किए जाने का प्रचलन था। पौराणिक परम्परा के अंतर्गत इन स्थानीय देवियों को मुख्य देवताओं की पत्नियों के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई। कभी उन्होंने लक्ष्मी के रूप में विष्णु की पत्नी का स्थान प्राप्त किया तो कभी पार्वती के रूप में शिव की पत्नी को।

प्रश्न 2. किस हद तक उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों को स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का | सम्मिश्रण है?

उत्तरः भारत में इस्लाम के आगमन के बाद होने वाले परिवर्तन शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं रहे। उसने संपूर्ण उपमहाद्वीप में विभिन्न सामाजिक समुदायों अर्थात् किसानों, शिल्पियों, योद्धाओं आदि सभी को प्रभावित किया । एक ही समाज में रहते-रहते, हिंदू-मुसलमान एकदूसरे के खान-पान, रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परंपराओं आदि की ओर आकर्षित होने लगे। धर्मान्तरित लोगों पर भी स्थानीय लोकाचारों का प्रभाव ज्यों-का-त्यों बना रहा। इस प्रकार स्थानीय परम्पराएँ एक सार्वभौमिक धर्म को प्रभावित करने लगीं।

उदाहरण के लिए, खोजा इस्माइली समुदाय के लोगों द्वारा कुरान के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए देशी साहित्यिक विधा का सहारा लिया गया था। इसी प्रकार, मालाबार तट (केरल) पर बसने वाले मुस्लिम व्यापारियों ने स्थानीय मलयालम भाषा को अपनाने के साथ-साथ मातृकुलीयता तथा मातृगृहता जैसे

स्थानीय आचारों को भी अपना लिया था। एक सार्वभौमिक धर्म के स्थानीय परम्पराओं के साथ सम्मिश्रण का संभवत: सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मस्जिद स्थापत्य के क्षेत्र में देखने को मिलता है। उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली अनेक मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का सराहनीय सम्मिश्रण है।

मस्जिद स्थापत्य के कुछ तत्त्व सार्वभौमिक होते हैं; जैसे-इमारत का मक्का की तरफ अनुस्थापन। इसे मेहराब (प्रार्थना का आला) तथा मिंबर (व्यास पीठ) की स्थापना से लक्षित किया जाता है। ऐसे सार्वभौमिक तत्त्व सभी मस्जिदों में समान रूप से पाए जाते थे। किन्तु मस्जिद स्थापत्य के अन्य तत्त्वों पर स्थानीय परिपाटियों का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण के लिए, उपमहाद्वीप में बनाई गई मस्जिदों में अनेक तत्त्वों जैसे छत और निर्माण कार्य में प्रयोग किए जाने वाले सामान में भिन्नता देखने को मिलती है। इस भिन्नता का प्रमुख कारण था, मस्जिदों के स्थापत्य का स्थानीय स्थापत्य परम्पराओं से प्रभावित होना तथा निर्माण कार्य में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री का प्रयोग किया जाना । उदाहरण के लिए केरल, बांग्लादेश और कश्मीर की मस्जिदों के स्थापत्य पर स्थानीय स्थापत्य का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

शिखर केरल के मंदिर स्थापत्य की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। अतः 13वीं शताब्दी में केरल में बनाई गई अनेक मस्जिदों की छतें शिखर के आकार की हैं। इसी प्रकार आधुनिक बांग्लादेश के जिला मैमनसिंग में 1609 ई0 में बनाई गई अतिया मस्जिद के गुम्बदों एवं मीनारों में इस्लामी स्थापत्य कला-शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस मस्जिद का निर्माण ईंटों से किया गया था। 1395 ई0 में झेलम नदी के किनारे पर बनाई गई शाहहमदान मस्जिद पर कश्मीरी स्थापत्य शैली का उल्लेखनीय प्रभाव है। यह मस्जिद कश्मीर काष्ठ (लकड़ी) स्थापत्यकला का एक प्रशंसनीय उदाहरण है। इसके शिखर और छज्जे नक्काशीदार हैं। उन्हें पेपरमैशी से सुसज्जित किया गया है। इस प्रकार यह

कहना उचित ही होगा कि उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का सम्मिश्रण है।

प्रश्न 3. बे-शरिया और बा-शरिया सूफी परम्परा के बीच एकरूपता और अंतर, दोनों स्पष्ट कीजिए

उत्तरः मुस्लिम कानूनों के संग्रह को शरिया कहते हैं जो कुरान शरीफ एवं हदीस पर आधारित है। यह कानून मुस्लिम समुदाय को निर्देशित करता है। हदीस का तात्पर्य है- पैगम्बर मोहम्मद साहब से जुड़ी परम्पराएँ, जिनमें मोहम्मद साहब की स्मृति से जुड़े हुए शब्द और उनके क्रियाकलापों का समावेश है। कुछ समकालीन रहस्यवादियों ने सूफी नियमों के मौलिक तत्वों के आधार पर नवीन आन्दोलनों की नींव रखी। ये समकालीन रहस्यवादी ख़ानक़ाह को त्यागकर फकीरी जीवन गुजारते थे। उन्होंने निर्धनता तथा ब्रह्मचर्य टो गौरव प्रदान किया। इन्हें मदारी, कलन्दर, हैदरी, मलंग इत्यादि नामों से जाना जाता था। शरिया की अवहेलना करने के कारण

भक्ति-सूफ़ी परंपराएँ (धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ) **203]** इन्हें बे-शरिया कहा जाता था, वहीं दूसरी ओर शरिया का पूर्णरूप से पालन करने वालों को बा-शरिया कहा गया। बे-शरिया तथा बा-शरिया दोनों ही इस्लाम से सम्बन्ध रखते थे तथा दोनों इन सूफी परम्पराओं के मध्य एकरूपता भी देखने को मिलती है। दोनों ही इस्लाम के मूल सिद्धांतों में पूर्णरूपेण विश्वास करते थे।

प्रश्न 4. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैवों ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की?

उत्तरः अलवार, नयनार तथा वीरशैव इत्यादि तीनों ही मतों ने छठी से दसवीं शताब्दी के मध्य अत्यधिक प्रसिद्धि पाई क्योंकि इन मतों ने जाति-प्रथा का खण्डन किया तथा भक्ति के अत्यधिक सरल मार्ग को दिखाया। तीनों मतों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

1. अलवार मत-इस मत का प्रचलन छठी शताब्दी ई. में दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु में आरम्भ हुआ। अलवार सन्तों की कुल संख्या **12** थी जो जाति-प्रथा, छुआछूत तथा कर्मकाण्ड के विरोधी थे। इसमें पुरुषों के समान महिलाओं को भी सभी धार्मिक तथा सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। इनमें एक महिला सन्त भी थीं, जिसका नाम अंडाल था।

2. नयनार मत-यह मत भी दक्षिण भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। जहाँ एक ओर अलवार मत वैष्णववाद को मानता था वहीं नयनार मत शैववाद का समर्थक था। नयनार सन्तों की कुल संख्या **63** थी जिन्होंने जाति प्रथा एवं ब्राह्मण प्रभुता के विरोध में आवाज उठायी। कुछ सीमा तक यह तथ्य सत्य भी प्रतीत होता है, क्योंकि इनके भक्ति सन्त विविध समुदायों से थे; जैसे-ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान तथा कुछ तो उन जातियों से भी आए थे, जिन्हें अस्पृश्य माना जाता था। अलवार और नयनार सन्तों की रचनाओं को वेदों के समान महत्वपूर्ण बताकर इस परम्परा को सम्मानित किया गया। अलवार सन्तों के प्रमुख काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधम् का उल्लेख तमिल वेद के रूप में किया गया है। इस ग्रन्थ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों के समान बताया गया है।

3. वीरशैव मत-यह मत वासव द्वारा कर्नाटक में आरम्भ किया गया। प्रारम्भ में वासव जैन था तथा चालुक्य राजा का मन्त्री था एवं कालान्तर में वह शैव हो गया। वीरशैव को लिंगायत मत भी कहा जाता था। ये श्राद्ध संस्कारों का पालन नहीं करते थे तथा मृतक को विधिपूर्वक दफनाते थे। ये जाति व्यवस्था तथा पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखते थे। इन्होंने कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया।

प्रश्न 5. कबीर और बाबा गुरु नानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इन उपदेशों का किस प्रकार संप्रेषण हुआ?

उत्तरः कबीर के मुख्य उपदेश-कबीरदास जी अपने समय के महानतम समाज सुधारक थे जिन्होंने धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव का एक विशिष्ट शैली में विरोध किया। कबीरदास जी से सम्बन्धित मुख्य उपदेश निम्नलिखित हैं

- कबीरदास जी ने मूर्तिपूजा तथा बहुदेववाद का पूर्ण रूप से विरोध किया।
- उन्होंने निराकार ब्रह्म की आराधना को उचित बताया।
- उन्होंने ज़िक्र तथा इश्क के सूफी सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा नाम स्मरण पर बल दिया।
- उनके अनुसार भक्ति के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।
- उनके अनुसार परम सत्य अर्थात् परमात्मा एक है, भले ही विभिन्न सम्प्रदायों के लोग उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हों।
- उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमानों के धार्मिक आडम्बरों का खण्डन किया।
- कबीर जातीय भेदभाव के विरुद्ध थे।

उपदेशों का सम्प्रेषण-कबीर के उपदेश काव्य रूप में संकलित किए गए हैं। कबीर जनमानस की भाषा में अपने उपदेश देते थे। उन्होंने अपनी भाषा में हिन्दी, पंजाबी, फारसी, अवधी व स्थानीय बोलियों के अनेक शब्दों का प्रयोग किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों ने उनके विचारों का प्रचार-प्रसार किया।
गुरु नानक के मुख्य उपदेश-गुरु नानक देव का जन्म **1469** ई. में पंजाब के ननकाना गाँव के एक व्यापारी परिवार में हुआ था। आरम्भ से ही उनका समय सूफी सन्तों के साथ व्यतीत होता था। उनके उपदेशों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

- उन्होंने हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म-ग्रन्थों को नकारा।
- उन्होंने निर्गुण भक्ति का समर्थन किया।
- उन्होंने धर्म के सभी आडम्बरों; जैसे-यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा, कठोर तप आदि का खण्डन किया।

- उनके अनुसार परमपूर्ण रब्ब (परमात्मा) का कोई लिंग अथवा आकार नहीं है।
- उन्होंने परमात्मा की उपासना के लिए एक सरल उपाय निरंतर स्मरण, जप बताया। उपदेशों का सम्प्रेषण गुरु नानक अपने विचारों का सम्प्रेषण पंजाबी भाषा में 'शबद' के गायन से करते थे। गुरु नानक इन 'शबद' को अलग-अलग रागों में गाते थे तथा उनका शिष्य मरदाना रबाब बजाकर उनकी संगति करता था

निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 250-300 शब्दों में)

प्रश्न 6. सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारों की व्याख्या कीजिए ।

उत्तरः इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में धार्मिक तथा राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफत की बढ़ती शक्ति के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद तथा वैराग्य की तरफ झुकाव बढ़ा। इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा। इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया। उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी। सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की। ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफ़ीवाद एक पूर्ण विकसित आंदोलन था जिसका सूफ़ी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था।

संस्थागत दृष्टि से सूफ़ी अपने को एक संगठित समुदाय-ख़ानक़ाह (फारसी) के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे। ख़ानक़ाह का नियंत्रण शेख (अरबी), पीर अथवा मुर्शीद (फारसी) के हाथ में था। वे अनुयायियों (मुरीदों) की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे। आध्यात्मिक व्यवहार के नियम निर्धारित करने के अलावा ख़ानक़ाह में रहने वालों के बीच के संबंध और शेख व

जनसामान्य के बीच के रिश्तों की सीमा भी नियत करते थे। बारहवीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफ़ी सिलसिलों का गठन होने लगा। सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है-जंजीर, जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते का द्योतक है, जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगंबर मोहम्मद से जुड़ी है।

इस कड़ी के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद मुरीदों तक पहुँचता था। दीक्षा के विशिष्ट अनुष्ठान विकसित किए गए जिसमें दीक्षित को निष्ठा का वचन देना होता था, और सिर मुँड़ाकर थेगड़ी लगे वस्त्र धारण करने पड़ते थे। पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह (फ़ारसी में इसका अर्थ दरबार) उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी। इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की, खासतौर से उनकी बरसी के अवसर पर, परिपाटी चल निकली। इस परिपाटी को उर्स (विवाह, मायने, पीट की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था, क्योंकि लोगों का मानना था कि मृत्यु के बाद पीर ईश्वर से एकीभूत हो जाते हैं और इस तरह पहले के बजाय उनके अधिक करीब हो जाते हैं।

लोग आध्यात्मिक और ऐहिक कामनाओं की पूर्ति के लिए उनका आशीर्वाद लेने जाते थे। इस तरह शेख का वली के रूप में आदर करने की परिपाटी शुरू हुई। कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी। ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फकीर की जिंदगी बिताते थे। निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था-कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि। शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था। इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफियों से अलग करके देखा जाता था।

प्रश्न 7. क्यों और किस तरह शासकों ने नयनार और सूफ़ी संतों से अपने संबंध बनाने का प्रयास किया?

उत्तरः चोल शासकों ने नयनार संतों के साथ संबंध बनाने पर बल दिया और उनका समर्थन हासिल करने का प्रयत्न किया। अपने रलि राजस्व के पद को दैवीय स्वरूप प्रदान करने और अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए चोल शासकों ने सुंदर मंदिरों का निर्माण कराया और उनमें पत्थर और धातु से बनी मूर्तियाँ स्थापित करवाईं। इस प्रकार, लोकप्रिय संत-कवियों की परिकल्पना को, जो जन-भाषाओं में गीत रचते व गाते थे, मूर्त रूप प्रदान किया गया। चोल शासकों ने तमिल भाषा के शैव भजनों का गायन मंदिरों में प्रचलित किया।

परान्तक प्रथम ने संत कवि अप्पार, संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाईं। इन मूर्तियों को मात्र उत्सव के दौरान निकाला जाता था। सूफी संत सामान्यतः सत्ता से दूर रहने की कोशिश करते थे, किन्तु यदि कोई शासक बिना माँगे अनुदान या भेट देता था तो वे उसे स्वीकार करते थे। कई सुल्तानों ने ख़ानक़ाहों को करमुक्त भूमि इनाम में दे दी और दान संबंधी न्यास स्थापित किए। सूफी संत अनुदान में मिले और सामान का इस्तेमाल जरूरतमंदों के खाने, कपड़े एवं रहने की व्यवस्था तथा अनुष्ठानों के लिए करते थे। शासक वर्ग इन संतों की लोकप्रियता, धर्मनिष्ठा और विद्वत्ता के कारण उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।

जब तुर्की ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलेमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया था। सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा गैर-इस्माली है। ऐसे समय में सुल्तानों ने सूफ़ी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भुत मानते थे। यह भी माना जाता था कि सूफ़ी संत मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं। शायद यही कारण है कि शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और ख़ानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।

प्रश्न 8. उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए कि क्यों भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया?

उत्तरः सामान्यतः सूफी तथा भक्ति चिन्तकों ने अपने विचारों को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया। प्रायः ये भाषाएँ स्थानीय होती थीं, जिन्हें समझना निश्चय ही जनसामान्य के लिए अत्यंत सुगम था। संत कवि यदि कुछ विशिष्ट भाषाओं का ही प्रयोग करते रहते तो उनके विचारों का सामान्य जनता के मध्य सम्प्रेषण सम्भव नहीं हो पाता तथा ये विचार उनके साथ ही विलुप्त हो गए होते। इस प्रकार इन सन्तों द्वारा स्थानीय भाषाओं का प्रयोग करना लाभकारी सिद्ध हुआ। इस तथ्य को हम निम्नलिखित उदाहरणों के द्वारा समझ सकते हैं

(1) दक्षिण भारत में नयनार तथा अलवार संतों ने अपने प्रवचन संस्कृत के स्थान पर तमिल भाषा में जनसामान्य को संचरित किए। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपनी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करते थे।

(2) गुरु नानक देव जी ने अपने प्रवचन 'शबद' स्थानीय भाषा पंजाबी में दिये। गुरु नानक जी के पदों और भजनों में उर्दू तथा फारसी के तत्कालीन प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग पाया जाता है।

(3) महान भक्ति सन्त कबीरदास जी के उपदेश, भजन तथा दोहे अनेक भाषाओं में हमें प्राप्त होते हैं। इनमें से कुछ दोहे सधुक्कड़ी भाषा में हैं; जो निर्गुण कवियों की विशेष बोली थी। कबीर की भाषा खिचड़ी है; उसमें अवधी, पूर्वी, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी सभी का समावेश है। **(4)** सूफी सन्तों ने भी अपने उपदेशों में स्थानीय भाषा का प्रयोग किया; उदाहरण के लिए, सूफी सन्त फरीद ने स्थानीय भाषा पंजाबी में काव्य-रचना की। मीरा ने अपने विचार बोलचाल की राजस्थानी भाषा में पदों के रूप में व्यक्त किये, जिनमें ब्रज भाषा, गुजराती और खड़ी बोली की भी झलक मिलती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भक्ति तथा सूफी सन्तों ने अपने उपदेश तथा प्रवचन स्थानीय भाषाओं में दिए, जिसके परिणाम . अत्यन्त ही लाभकारी हुए।

प्रश्न 9. इस अध्याय में प्रयुक्त किन्हीं पाँच स्रोतों का अध्ययन कीजिए और उनमें निहित सामाजिक व धार्मिक विचारों की चर्चा कीजिए |

उत्तरः पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न स्रोत दिये गये हैं जिनमें कई प्रकार के सामाजिक व धार्मिक विचार निहित हैं

(1) स्रोत-1 (ब्राह्मण और अस्पृश्य):

इस स्रोत में सामाजिक विचार के बारे में संकेत किया गया है। अलवार संत तोंदराडिप्पोडि के अनुसार ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता थे, परन्तु वे भगवान विष्णु की सेवा में निष्ठा नहीं रखते थे। इसलिये भगवान विष्णु उन दासों को ज्यादा पसन्द करते थे जो उनके चरणों में अपनी आस्था रखते हैं। अलवार संतों का यह वक्तव्य जाति-व्यवस्था के प्रति उनके विचार को प्रकट करता है।

(2) स्रोत-4 (अनुष्ठान और वास्तविकता):

यह स्रोत धार्मिक कर्मकाण्डों के विरुद्ध बासवन्ना के विचारों को प्रकट करता है। बासवन्ना के अनुसार ब्राह्मण साँप की पत्थर की मूर्ति को तो दूध पिलाते थे, परन्तु वास्तविक साँप को देखते ही वे उसकी हत्या .करने पर उतारू हो जाते थे। ऐसा ही आडम्बर देवता को नैवेद्य चढ़ाकर भी करते थे। पत्थर से बनी ईश्वर की मूर्ति जो भोजन ग्रहण ही नहीं कर सकती उसे तो भोजन परोसते थे, परन्तु वास्तविक भूखे दास को भोजन देने से मना कर देते थे। इस प्रकार बासवन्ना दोहरे क्रियाकलाप को इंगित कर अनुष्ठानों की व्यर्थता पर अपना विचार प्रकट करता है।

(3) स्रोत-8 (चरखानामा):

यह स्रोत एक सूफी कविता है; जो उस समय की महिलाएँ चरखा कातते हुए गाती थीं। इस स्रोत में धर्म के परम सत्य को उद्घाटित करने की अति सूक्ष्म, लेकिन सबसे प्रभावी विधि का वर्णन किया गया है। स्रोत के अनुसार हर आती-

जाती श्वास के साथ परमात्मा का जिक्र यानी नाम जपना चाहिए। ज़िक्र पेट से छाती तक उच्चारित होना चाहिए यानी नाम

जीवन के केन्द्र नाभि से उठकर छाती तक यानी हृदय तक आना चाहिए। रोज सुबह-शाम भगवान के नाम का इसी प्रकार जिक्र करना चाहिये।

(4) स्रोत-10 (एक ईश्वर):

यह स्रोत संत कबीर की शिक्षाओं से सम्बन्धित है। कबीर का कथन है कि ईश्वर एक है, उसे चाहे राम कहो या रहीम। कबीर ने यह भी कहा है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ही भ्रमित हैं। दोनों धर्मों के आडम्बरों की आलोचना करते हुए कबीर कहते हैं कि इनमें से कोई भी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता।

(5) स्रोत-11 (मीरा का कृष्ण प्रेम):।

यह स्रोत मीराबाई की भक्ति की पराकाष्ठा तथा उसके अन्तर्मन की भाव-प्रवणता को व्यक्त करता है। मीरा अपनी भक्ति की उस भाव दशा में पहुँच गयी थी कि सारा संसार उन्हें कृष्णमय लगता था। मीरा इस गीत द्वारा सांसारिक जीवन के प्रति अपने वैराग्य भाव का वर्णन करती है। मीरा के अनुसार "गोविन्द के गुणगान के अतिरिक्त मेरी अन्य कोई अभिलाषा या आकांक्षा नहीं है।"

प्रश्न 10. भारत के मानचित्र पर 3 सूफी स्थल और 3 वे स्थल जो मंदिर (विष्णु , शिव और देवी से जुड़ा एक मंदिर) से सम्बद्ध है , निर्दिस्ट कीजिये ।

उत्तरः सूफी स्थल:

1. अजमेर, राजस्थान - ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह

2. निजामुद्दीन दरगाह, दिल्ली

3. आजमगढ़, उत्तर प्रदेश - सईयद सालार मसूद दरगाह

मंदिर स्थल:

1. वैष्णोदेवी मंदिर, जम्मू और कश्मीर

2. केदारनाथ मंदिर, उत्तराखंड

3. महालक्ष्मी मंदिर, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रश्न 11. इस अध्याय में वर्णित किन्हीं 2 धार्मिक उपदेशकों/चिंतकों/संतों का चयन कीजिए और उनके जीवन व उपदेशों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए। इनके समय, कार्यक्षेत्र और मुख्य विचारों के बारे में एक विवरण तैयार कीजिए। हमें इनके बारे में कैसे जानकारी मिलती है और हमें क्यों लगता है कि वे महत्त्वपूर्ण हैं ?

उत्तरः

1. बाबा गुरु नानक - बाबा गुरु नानक (1469-1539) का जन्म एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ। उनका जन्मस्थल मुख्यतः

इस्लाम धर्मावलंबी पंजाब का ननकाना गाँव था जो रावी नदी के पास था। उन्होंने फारसी पढ़ी और लेखाकार के कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनका विवाह छोटी आयु में हो गया था, किंतु वह अपना अधिक समय सूफ़ी और भक्त संतों के बीच गुजारते थे। उन्होंने दूर-दराज की यात्राएँ भी की। बाबा गुरु नानक का संदेश उनके भजनों और उपदेशों में निहित है। इनसे पता लगता है कि उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया। धर्म के सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया; जैसे- यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप । हिंदू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को भी उन्होंने नकारा। बाबा गुरु नानक के लिए परम पूर्ण 'रब' का कोई लिंग या आकार नहीं था। उन्होंने इस रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय बताया और वह था उनका निरंतर स्मरण व

नाम का जाप । उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से सामने रखे।

बाबा गुरु नानक ये शबद अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था। बाबा गुरु नानक ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया। सामुदायिक उपासना (संगत) के नियम निर्धारित किए जहाँ सामूहिक रूप से पाठ होता था। उन्होंने अपने अनुयायी अंगद को अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया; इस परिपाटी का पालन 200 वर्षों तक होता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा गुरु नानक किसी नवीन धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे, किंतु उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने अपने आचार-व्यवहार को सुगठित कर अपने को हिंदू और मुसलमान दोनों से पृथक् चिहनित किया। पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी ने बाबा गुरु नानक तथा उनके चार उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास और कबीर की बानी को आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया। इनको 'गुरबानी' कहा जाता है और ये अनेक भाषाओं में रचे गए।

2. मीराबाई - मीराबाई संभवतः

भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं। उनकी जीवनी उनके लिखे भजनों के आधार पर संकलित की गई है। वह मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया। मीराबाई ने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया। उन्हें विष देकर जान से मारने का असफल प्रयास भी किया गया। उन्होंने पति और राजभवन के ऐश्वर्य को त्याग कर विधवा के समान सफेद वस्त्र धारण कर लिया और संन्यासिनी बन गईं। कुछ परंपरा के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे। इससे पता चलता है कि मीरा ने अतिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया। उनके भक्ति गीत अंतर्मन की भाव-

प्रवणता को व्यक्त करने वाले हैं। उनके रचित पद आज भी स्त्रियों और पुरुषों द्वारा गाए जाते हैं।

प्रश्न 12. इस अध्याय में वर्णित सूफ़ी व देव स्थलों से संबद्ध तीर्थयात्रा के आचारों के बारे में अधिक जानकारी हासिल कीजिए। क्या यह यात्राएँ अभी भी की जाती हैं? इन स्थानों पर कौन लोग और कब-कब जाते हैं? वे यहाँ क्यों जाते हैं? इन तीर्थयात्राओं से जुड़ी गतिविधियाँ कौन-सी हैं?

उत्तरः ख्वाजा मुइनुद्दीन की अजमेर स्थित दरगाह विश्व प्रसिद्ध है। यह दरगाह मुइनुद्दीन चिश्ती की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी। मुहम्मद बिन तुगलक पहला सुल्तान था जिसने इस दरगाह की यात्रा की थी। मुगल सम्राट अकबर ने यहाँ 14 बार यात्रा की।

मुगल शहजादी जहाँआरा ने अपने पिता शाहजहाँ के साथ 1643 में अजमेर शरीफ की तीर्थयात्रा की जिसका वर्णन उसने बड़े ही ओजस्वी भाषा में किया है। 18वीं शताब्दी में दक्कन के कुली खान ने शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली की दरगाह के बारे में मुक्का-ऐदेहली में लिखा कि शेख सिर्फ दिल्ली के ही चिराग नहीं अपितु सारे मुल्क के चिराग हैं।

खासतौर पर रविवार के दिन यहाँ लोगों का हुजूम आता है। दीवाली के महीने में दिल्ली की सारी आबादी दरगाह पर उमड़ पड़ती है। यहाँ हिंदू और मुसलमान एक ही भावना से आते हैं। दाता गंज बक्स की दरगाह लाहौर में स्थित है। सुल्तान महमूद के पोते ने उनकी मजार पर दरगाह बनवाई है। यह दरगाह उनकी बरसी के अवसर पर उनके अनुयायियों के लिए तीर्थस्थल बन गई। आज भी हुजविरी दाता गंज बख्स के रूप में आदरणीय हैं और उनकी दरगाह को दाता दरबार कहा जाता है। अपनी यात्रा के दौरान अलवार और नयनार संतों ने कुछ पावन स्थलों को अपने इष्ट का निवास स्थल घोषित किया। इन्हीं स्थलों पर कालांतर में विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ और वे तीर्थस्थल बन गए।

अनुष्ठानों के समय इन मंदिरों में संत कवियों द्वारा भजन गाया जाता था और साथ-साथ इन संतों की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी।